सातवाँ अध्याय
अव्यय और निपात

ऐसे शब्द, जिनके रूप में कोई विकार–परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एक से–सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं।

अव्यय शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में व्यय–घटती–बढ़ती न हो; वह अव्यय है।[१]

अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं–(१) उपसर्ग (२) क्रिया विशेषण (३) समुच्चयादि बोधक (Conjunctions), (२) मनोविकारसूचक (Interjections) और (६) अतिरिक्त अव्यय।

उपसर्ग (उवसग्ग)

जो अव्यय क्रिया के पूर्व आते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। उपसर्ग लगाने से क्रिया के अर्थ में परिवर्तन या वैशिष्ट्य आ जाता है। उपसर्ग की स्थिति तीन प्रकार की होती है।

(१) कोई उपसर्ग धातु के मुख्यार्थ को बाँधकर नवीन अर्थ का बोध कराता हैं; (२) कोई धात्वर्थ का ही अनुवर्तन करता है और (३) कोई विशेषण होकर उसी धात्वर्थ को ओर भी स्पष्ट कर देता है[२]। यथा–हरइ–ले जाता है; अवहरइ (अपहरति)–चुराता है, अणुहरइ (अनुहरति)–नकल करता है, परिहरइ (परिहरति) छोड़ता है, आहरइ (आहरति)–लाता है, पहरइ (प्रहरति)–मारता है, विहरइ (विहरति)–विहार करता है, उवहरइ (उपहरति)–उपहार देता है[३], आदि।

---

१. स्वरादिनिपातमव्ययम्–स्वरादि और निपात की अव्यय संज्ञा है।–१–१–३७ पा.
सदृशं त्रिषु लिङ्गेसु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥–सि. कौ. अव्यय प्रकरण

२. धात्वर्थं बाधते कश्चित्कश्चित्तमनुवर्तते।
विशिनष्टि तमेवाऽर्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा॥

३. उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराऽऽहार–संहार–विहार–परिहारवत्।–स्नातकसंस्कृतव्याकरणम् पृ. १२१

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

संस्कृत में २२ उपसर्ग हैं, पर प्राकृत में २० उपसर्ग ही मिलते हैं; निस् का अन्तर्भाव निर् में और दुस् का अन्तर्भाव दुर् में हो जाता है। प, परा, ओ–अव, सं, अणु, ओ–अव, ओ–नि, दु, अहि, वि, अहि, सु, उ, अइ, णिनि, पडि–पति, परि–पलि, इ–पि–वि–अवि, ऊ–ओ–उव और आ ये बीस उपसर्ग हैं। संस्कृत में भी निस् का प्रयोग निर् अन्तर्गत और दुस् प्रयोग दुर् अन्तर्गत पाया जाता है।

प < प्र–प्रकर्ष–अधिकता बतलाने के लिए–परूवेइ (प्ररूपयति), पभासेइ (प्रभाषते)

परा < परा–विपरीत अर्थ बतलाने के लिए–पराघाओ (पराघातः); पराजिणइ (पराजयते)

ओ, अव < अप–दूर अर्थ बतलाने के लिए–ओसरइ, अवसरइ (अपसरति) अवहरइ (अपहरति) दूर ले जाता है; ओसरिअं, अवसरिअं (अपसृतम्)

सं < सम्–अच्छी तरह–संखिवइ (संक्षिपति), संखितं (संक्षिप्तम्)।

अणु, अनु < अनु–पीछे या साथ–रामं अणुगमइ लक्खणोः; अणुजाणइ (अनुजानाति), अनुमई (अनुमतिः)।

ओ, अव < अव–नीचे, दूर, अभाव–ओअरइ (अवतरति); ओआरो (अवतारः) अवमाणो (अवमानः); ओआसो, अवयासो (अवकाशः)।

ओ, नि, नी < निर्–निषेध, बाहर, दूर–ओमल्लं, निम्मल्लं (निर्माल्यम्) निग्गओ (निर्गतः), नीसहो (निस्सहः); रामो तं णिराकरइ।

दु, दू < दुर्–कठिन, बुरा–दुन्नयो (दुर्नयः), दूहवो (दुर्भगः)।

अहि, अभि < अभि–ओर–अहिगमणं (अभिगमनम्)–किसी ओर जाना, अभिहणइ (अभिहन्ति), अहिप्पाओ (अभिप्रायः)।

वि < वि–अलग होना, विना–विकुब्बइ (विकुर्वति), विणओ (विनयः), वेणइआ (वैनयिकाः)।

अहि, अधि < अधि–ऊपर–अहिरोहइ (अधिरोहति)–ऊपर चढ़ता है, अज्झायो (अध्यायः), अहीइ (अधीते)।

सु–सू < सु–अच्छा सहज–सुअरं (सुकरम्), सूहवो (सुभगः)।

उ < उत्–ऊपर, ऊँचा श्रेष्ठ–उग्गच्छइ (उद्गच्छति), उग्गओ (उद्गतः), उप्पत्तिआ (औत्पत्तिकी)।

अइ, अति < अति–बाहुल्य या उल्लंघन–अईओ (अतीतः), वइक्कंतो (व्यतिक्रान्तः), अतिसओ (अतिशयः), अच्चन्तं (अत्यन्तम्)।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

णि, नि < नि–अन्दर, नीचे–दुट्ठे णियमइ (दुष्टान् नियमति)–दुष्टों को अधीन या नीचे करता है; णिवेसो (निवेशः), सन्निवेसो (सन्निवेशः), निविसइ (निविशते)।

पडि, पति परि < प्रति–ओर, उलटा–पडिआरो (प्रतिकारः) पडिमा (प्रतिमा), पतिट्ठा (प्रतिष्ठा), परिट्ठा (प्रतिष्ठा)।

परि, पलि < परि–चारों ओर–सुज्जो पुहवीं परिगमइ–सूर्य पृथ्वी के चारों और घूमता है। परिवुडो (परिवृत्तः), पलिहो (परिघः)।

इ, पि, वि, अवि < अपि–भी, निकट–देवदत्तो वि णागओ–देवदत्त भी नहीं आया। किमवि (किमपि), कोइ, कोवि (कोऽपि)।

ऊ, ओ, उव < उप–निकट, उवासणा (उपासना)–निकट बैठना, प्रार्थना; ऊझायो, ओज्झायो, उवज्झायो (उपाध्यायः)।

आ < आङ्–तक–दिलीवो आसमुद्दं पुहवीए पइ आसि–दिलीप समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा था; आवासो (आवासः), आयन्तो (आचान्तः)।

क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण अव्यय प्राकृत में संस्कृत के समान कई प्रकार के होते हैं। क्रिया विशेषणों की संख्या प्राकृत में संस्कृत से भी अधिक है। नीचे अकारादि क्रम से प्रमुख क्रियाविशेषणों की तालिका दी जाती है।

अइ < अति–अतिशय	अइ < अयि–संभावना
अईव <अतीव–विशेष, अधिकता, बहुत	अओ < अतः–इसलिए
अग्गओ < अग्रतः–आगे	अग्गे < अग्रे–पहले
अज्ज < अद्य–आज	अण (नञ्) < अन–निषेधार्थक
अण्णमण्णं (अन्योन्यम्) < अन्योन्यम्–आपस में	अण्णहा < अन्यथा–विपरीत
अणंतरं < अनन्तरम्–पश्चात्, बिना	अत्थं < अस्तम्–अदर्शन, अस्त–छिपना
अत्थि < अस्ति–सत्तासूचक, अस्तित्वसूचक	अत्थ < अस्तु–विधिसूचक, निषेधसूचक
अंतो < अन्तर–भीतर	अंतरं < अन्तरम्–अन्तर
अप्पणो < आत्मनः–अपना	अपरज्जु < अपरेद्युः–दूसरे दिन

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अप्पेव < अप्येवम्–संशय

अभिक्खं < अभीक्ष्णम्–निरन्तर, बारम्बार

अभितो < अभितः–चारों ओर

अलं < अलम्–बस, पर्याप्त

अलाहि < अलंहि–निवारण, निषेध

अवस्सं < अवश्यम्–अवश्य

अवरिं < उपरि–ऊपर

असइं < असकृत्–अनेक बार

अहत्ता < अधस्तात्–नीचे

अहव, अहवा < अथवा–पक्षान्तर

अहा < यथा–जिस प्रकार

अहे < अधः–नीचे

आवि < आविः–प्रकट

आहच्च < आहत्य–बलात्कार

इ < इ–पादपूर्त्ति के लिए

इओ < इतः–यहाँ से, वाक्यारम्भ में

इक्कसरिअं < एकसृतम्–सम्प्रति

इत्थत्तं < इत्थंत्वम्–इस प्रकार

इच्चत्थो < इत्यर्थः–इसके निमित्त

इयाणिं < इदानीम्–इस समय

इर < किल–निश्चय

इह < इह–यहीं

इहं < ऋधक्–सत्य

इहयं < ऋधकक्–सत्य

इहरा < इतरथा–अन्यथा

इं < किम्–प्रश्न, गर्हा

ईसिं < ईषत्–थोड़ा

ईसि < ईषत्–थोड़ा

उत्तरओ < उत्तरतः–उत्तर से

उच्चअ < उच्चैः– ऊँचे

उत्तरसुवे < उत्तरश्चः–पश्चात्

उप्पिं < उपरि–ऊपर

उवरिं < उपरि–ऊपर

उवरि < उपरि–ऊपर

एअं < एतत्–यह

एकइआ < एकदा–एक समय

एक्कइआ < एकदा–एक समय

एक्कया < ,, ,,

एक्कसरिअं < एकसृतम्–झटिति, सम्प्रति

एक्कसि, इक्कसि < एकदा–एक समय

एक्कसिअं, इक्कसिअं < एकदा–एक समय

एगइया, एगया < एकदा–एक समय

एगयओ < एकैकतः–एक–एक

एगंततो < एकान्ततः–एक ओर

एगज्झं < ऐकध्यम्–एक प्रकार

एतावता, एयावया < एतावता–इतना

एत्थं, एत्थ < अत्र–यहाँ

एव < एव–ही

एवं < एवम्–इस तरह

एवमेव < एवमेव–इस तरह

कओ < कुतः–कहाँ से

कत्थइ < कुत्रचित्–कहीं

कल्लं < कल्यम्–कल

कह, कहं < कथम्–कैसे

कहि, कहिं < कुत्र–कहाँ

कालओ < कालतः–समय से

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

काहे < कहिं–कब, किस समय
किंणा, किण्णा, किणो < किन्नु–प्रश्न
केवच्चिरं, केवच्चिरेण < किय-च्चिरम् , कियच्चिरेण–कितनी देर से
खलु, खु < खलु–निश्चय
जइ < यदि–जो
जत्थ < यत्र–जहाँ
जहेव < यथैव–जिस प्रकार से
जाव < यावत्–जब तक
जह–तहा < यथा–तथा–जैसे-तैसे
जेण < येन–जिससे
झगिति–सम्प्रति
ण < न–निषेधार्थक
णं < नं–वाक्यालंकार
णवर–परन्तु, केवलं
णवरं < नवरम्–विशेषता
णूण, णूणं <नूनम्–निश्चय, तर्क
तं < तत्–वाक्यारंभ, इसलिए
तए < तदा–तब

तत्थ < तत्र–वहाँ
तह, तहा < तथा–उस तरह
तहि, तहिं < तत्र–वहाँ
तिरो < तिरः–छिपाना
तु < तु–किन्तु
दर < दर–आधा, थोड़ा, अल्प
दुट्ठु–दुष्ठु–दुष्ट, खराब
धुवं < ध्रुवं–निश्चय
पच्चुअ < प्रत्युत–उलटा
पच्छा < पश्चात्–पीछे
परज्जु < परेद्युः–दूसरे दिन, कल

किंचि < किञ्चित्–अल्प, ईषत्, थोड़ा
किर, किल < किल–निश्चय, सचमुच
केवलं < केवलम्–सिर्फ

चिअ, चेअ < चैव–और भी
जओ < यतः–क्योंकि
जह, जहा < यथा–जैसे
जं < यत्–जो, क्योंकि
जह, जहा < यथा–यथा–जैसे-जैसे
जाव < यावत्–जब तक
जे < ये–पादपूरक
झत्ति < झटिति–जल्दी
णइ–अवधारण
णमो < नमः–नमस्कार
णवरि–अनन्तर
णाणा < नाना–अनेक
णो < नो–निषेध
तंजहा < तद्यथा–उदाहरणार्थ, जैसे
तओ, ततो, तत्तो < ततः– पुनः इसके पश्चात्

तप्पमिइं < तत्प्रभृति–इसको आदि कर
तहेव < तथैव–उसी तरह
तिरियं < तिर्यक्–बाँका या तिरछा
तीअं < अतीतम्–अतीत
थू < थुत्–तिरस्कार
दिवारत्तं < दिवारात्रम्–रात-दिन
दुहओ, दुहा < द्विधा–दो प्रकार
णिच्चं, निच्चं < नित्यम् –नित्य
पगे < प्रगे–प्रातःकाल में
पडिरूवं < प्रतिरूपम्–समान
परं < परम्–परन्तु

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

परंमुहं < पराङ्मुखम्–विमुख
परितो < परितः–चारों ओर
परसवे < परश्वः–परसों
परोप्परं, परुप्परं < परस्परम्–परस्पर में, आपस में
पसज्झ < प्रसह्य–हठात्, जबर्दस्ती
पातो < प्रातः–प्रातःकाल
पायो, पाओ < प्रायः–प्रायः, बहुधा
पि < अपि–भी
पुण, पुणो < पुनः–फिर
पुणरुत्तं < पुनरुक्तम्–पुनरुक्त
पुणरवि < पुनरपि–फिर भी
पुरओ < पुरतः–आगे, सम्मुख
पुरत्था < पुरस्तात्–आगे, सम्मुख
पुरा < पुरा–पहले
पुहं, पिहं < पृथक्–अलग
पेच्च < प्रेत्य–परलोक में
बहिद्धा, बहिया, बहिं < बहिर्धा, बहिः–बाहर
भुज्जो < भूयः–बार–बार, अधिक
मग्गतो < मार्गतः–पीछे
मणयं < मनाक्–थोड़ा
मुसा < मृषा–झूठ
मुहु < मुहुः–बार–बार
मा < मा–निषेध
मोदउल्ला < मुधा–व्यर्थ
य्हो < ह्यः–बीता हुआ, कल
रही < रहः–गुप्त
लहु < लघु–शीघ्र
व्व < इव–जिस प्रकार
विणा < विना–बिना
वीसुं < विष्वक्–व्याप्त
वे < वै–निश्चय
सइ < सदा–सदा
सइ < सकृत्–एकवार
सक्खं < साक्षात्–प्रत्यक्ष
सज्जो < सद्यः–शीघ्र
सद्धिं < सार्धम्–साथ
सपक्खिं < सपक्षम्–अभिमुख, सामने
समं < समम्–साथ
सम्मं < सम्यक्–ठीक, भली प्रकार
सयं < स्वयम्–स्वयम्
सया < सदा–सदा
सव्वओ < सर्वतः–सभी ओर
सह < सह–साथ
सहसा < सहसा–एक बारगी
सिय, सिअ < स्यात्–कथञ्चित्
सुवत्थि < स्वस्ति–कल्याण
सुवे < श्वः–आने वाला कल
सेवं < तदेवं–समाप्ति, स्वीकार
हंद < हन्त (गृहाण)–ग्रहण करो, ले
हला < –सखि के लिए सम्बोधन।
हव्वं < हव्यम्–शीघ्र
हिर < –निश्चय
हेट्ठा < अधः–नीचे

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय एक वाक्य को दूसरे वाक्य में मिलाता है, उसे समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं। इसके सात भेद हैं।

(१) संयोजक—य, अह, अहो, (अथ), उद, उ (तु), किंच आदि।

(२) वियोजक—वा, किंवा, तु, ऊ, किंतु आदि।

(३) संकेतार्थ—जइ, चेअ, णोचेअ, (नोचेत्), जइपि, तहावि, जदि इत्यादि।

(४) कारणवाचक—हि, तअ, तेण इत्यादि।

(५) प्रश्नवाचक—अहो, उद, किं, किमुत, तणु, णु, किन्तु इत्यादि।

(६) कालवाचक—जाव, ताव, जदा, तदा, कदा इत्यादि।

(७) विधि अथवा निषेधार्थक—अङ्ग, अह, इ, आम, अद्धा इत्यादि।

'अह' कार्यारम्भ और 'इति' कार्यान्त का सूचक है। 'य' शब्द और अर्थ का सूचक है। जहाँ हिन्दी में 'और' दो जोड़े हुए शब्दों के बीच में आता है, वहाँ प्राकृत में 'य' शब्द दोनों के उपरान्त आता है। यथा–रामो लक्खणो य सीआए सह गमीईअ।

मनोविकार सूचक अव्यय

(१) अव्वो–दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद और पश्चात्ताप अर्थों में 'अव्वो' का प्रयोग होता है। अव्वो तम्मेसि–खेद है कि तुम उदास हो। अव्वो तुज्झेरिसो माणो–प्रणययुक्त प्रणयी में तुम्हारा ऐसा मान ?–इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते हैं। आनन्द अर्थ में–अव्वो पिअस्स समओ–यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का समय है। आदर अर्थ में–अव्वो सो एइ–मेरा प्रियतम यह आ रहा है। भय अर्थ में–रूसणो अव्वो–भय है कि वह थोड़े अपराध पर ही रूठ जाने वाला है। खेद और विषाद अर्थ में–अव्वो कट्ठं–मैं खिन्न और विषण्ण हूँ। पश्चात्ताप अर्थ में–अव्वो किं एसो सहि यए वरिओ–सखि! मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे वरा क्यों ?

(२) आ, हं क्रोध सूचक; आ कहमिदं संजाअं–अरे! यह कैसे हो गया–क्रोध दिखलाया गया है। हं ते कइवरा विवरीया बोहा–क्रोध सहित–खेद है कि कविवर विपरीत बोध वाले हैं।

(३) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों में 'हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में–हन्दि विदेसो–दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है। विकल्प अर्थ में–जीवइ हन्दि पिआ–पता नहीं मेरी प्रियतमा

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

जीती है अथवा नहीं। पश्चात्ताप अर्थ में–हन्दि किं पिआ मुक्का ? क्या हमने विरह दुःख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? निश्चय अर्थ में–हन्दि मरणं–मरना निश्चित है। सत्य अर्थ में–हन्दि जमो गिम्हो–ग्रीष्म यमराज है, यह बात सच है। शोकसूचक अर्थ में–हन्दि रोगेण पीडिताह्मि–रोग से पीड़ित हूँ।

(४) भय, वारण और विषाद अर्थ में 'वेव्वे' का प्रयोग होता है। यथा–समुहोट्ठीअम्मि मयरे वेव्वे त्ति भणेइ मल्लिउच्चिणिरी–सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुच्चेत्री।

(५) निश्चय, वितर्क, संभावना और विस्मय अर्थों में 'हुं' और 'खु' का प्रयोग किया जाता है। निश्चय अर्थ में–सो हुं अन्नरओ–यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है। वितर्क और संभावना अर्थों में–तस्स हुं जुग्गा सि सा खु न तं–मैं ऐसा अनुमान करता हूँ और यह संभव भी है कि वह दूसरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके प्रियतम के योग्य नहीं हो। विस्मय अर्थ में–एसो खु तुज्झ रमणो–आश्चर्य है कि यह तुम्हारा प्रिय है।

(६) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है। गर्हा अर्थ में–तुज्झ ऊ रमणे–तुम्हारा निन्दित रमण। आक्षेप अर्थ में–ऊ किं मए भणिअं–अरे मैंने क्या कह डाला। विस्मय अर्थ में–ऊ अक्षरा मह सही–अहो, मेरी सखी अप्सरा है। सूचन अर्थ में–ऊ इअ हसेइ लोओ–तुम्हारे प्रियतम को दोष दे–देकर सखियाँ हँसती हैं।

(७) आश्चर्य अर्थ में अम्मो अव्यय का प्रयोग होता है। यथा–स अम्मो पत्तो खु अप्पणो–वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया; आश्चर्य है।

(८) रतिकलह अर्थ में रे, अरे और हरे अव्यय का प्रयोग होता है। यथा–अरे मए समं मा करेसु उवहासं–रतिकाल में झगड़ा हो जाने पर नायिका कहती है–अरे मेरे साथ हँसी मत करो। अरे बहुवल्लह–अरे बहुतों के प्रिय।

(९) हद्धी अव्यय निर्वेद अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा–
हद्धी, इअ व्व चीरीहि उल्लविअं।

(१०) अम्हो आश्चर्य अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा–अम्हो कहं भाइ–आश्चर्यं कथं भाति।

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अतिरिक्त अव्यय

निपात

तद्धितों और कृत् प्रत्ययों के संयोग से भी कुछ अव्यय बनते हैं। तथा इआणि, इआणिं (इदानीम्), इअहरा (इतरथा), एण्हि, एत्ताहे (इदानीम्) कहि (कुत्र), कुओ, कुदो (कुतः), जत्थ (यत्र), जह, जहा, जहि (यथा), सव्वाओ, (सर्वतः), सहासउत्तो (सहस्रकृत्वः), एकहा आदि अव्यय के समान ही प्रयुक्त होते हैं।

प्राकृत में निपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो पद व्याकरण के नियमों के विपरीत सिद्ध होते हैं, वे निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जनभाषा होने से प्राकृत में ऐसे सहस्त्रों शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्तियाँ सिद्ध नहीं की जा सकती हैं। ऐसे शब्द निपातन से सिद्ध माने जाते हैं। जितने देशी शब्द हैं, वे प्रायः निपातन से सिद्ध माने गये हैं।

अ

अउज्झहरो–रहस्यभेदी
अक्कंतो–वृद्धः
अग्गिआयो–इन्द्रगोपः
अंकिअं–आलिङ्गितम्
अच्छिविअच्छी–परस्पराकृष्टिः
अच्छुद्धसिरी–मनोरथाधिकफलप्राप्तिः
अजमो–ऋजुः
अड्डुअणा–पुंश्चली
अणरहू–नववधूः
अणुज्झिअओ–प्रयतः, परिजागरितः
अणुसूआ–आसन्नप्रसवा
अण्णइओ–सर्वार्थतृप्तः
अत्तिहरी–दूती
अन्तरिज्जं–रशना, कटिशूलम्
अपिट्टं–पुनरुकृतम्
अप्पुण्णं–पूर्णम्
अमओ–असुरः
अम्हत्तो–प्रमृष्टः
अकोप्पो–अपराधः
अग्गहिओ–विरचितः, विप्रगृहीतः
अग्गुच्छं–प्रतीतम्
अच्छिवडणं–निमीलनम्
अच्छिहरूल्लो–द्वेष्यः
अजडो–जारः
अट्टणो–आर्तज्ञः
अणडो–जारः
अणहवणअं–भर्सितम्
अणुदिवं–दिनमुखम्
अण्णं–आरोपितम् , खण्डितम्
अण्णासअं–आस्तृतम्
अथक्कं–अकाण्डम्
अपंडिअं–अनष्टम्
अपुण्णं–आक्रान्तम्
अबुद्धसिरी–मनोरथाधिकफलप्राप्तिः
अम्मच्छं–असंबद्धम्
अयुजरेवइ–अचिरयुवतिः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

अरणी–सरणी
अल्लिल्लो–भ्रमरः
अवडाहिअं–उत्कृष्टम्
अवरिज्जं–अद्वैतम्
अवहिट्ठो–दर्पितः
अवाडिओ–वञ्चितः
अविहिओ–मत्तः
अस्संगिअं–आसक्तम्
अहिरोइअं–पूर्णम्
अहुमाअं–पूर्णम्
अलवलवसहओ–धूर्त्तवृषभः
अवगलो–आक्रान्तः
अवडुल्लिअं–कूपादिनिपतितम्
अवसण्णं–स्तुतम्
अवहोओ–विरहः
अविणअवइ–जारः
अव्वा–अम्बा
अहिअलो–क्रोधः
अहिसिओ–ग्रहभीतः

आ

आआसत्तअं–हर्म्यपृष्ठम्
आकासिअं–पर्याप्तम्
आणंदवसो–प्रथमरजस्वलारक्तवस्त्रम्
आप्पणं–पिष्टम्
आरिट्ठो–यातः
आरोग्गरिअं–रक्तम्
आविअं–प्रोतम्
आवेवओ–व्यासक्तः, प्रवृद्धः
आहडं–सीत्कारः
आलिआ–आली
आओ–आपः
आडविओ–चूर्णितः
आणुअं–आननम्
आरनालम्–अम्बुजम्
आरोइअं–मुकुलितम् , मुक्तम्, भ्रान्तम्, पुलकितम्
आरोद्धो–प्रवृद्धः, गृहागतः
आविलिओ–कुपितः
आसंधो–आस्था
आहिद्धो–रुद्धः, गलितः

इ

इसओ–विस्तीर्णः

ई

ईद्धग्गिधूमो–तुहिनम्

उ

उओ–ऋजुः
उक्कंअं–प्रसृतम्
उओग्गिओ–सन्नद्धः
उक्कज्जो–अनवस्थितः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

उक्कंडिअ–आरोपितम् , खण्डितम्
उक्क रिओ–विस्तीर्णः
उक्कासं–उत्कृष्टम्
उक्खणं–अवकीर्णम्
उघूणम्–पूर्णम्
उच्चरिअं–पुरस्कृतम्
उच्चुगो–अनवस्थितः
उच्छिरणं–उच्छिष्टम्
उच्छूढो–आरूढः
उज्झमाणं–पलायितम्
उज्झलो–प्रबलः
उज्झिअं–शुष्कम्, निम्नीकृतम्
उडाहिअं–उत्क्षिप्तम्
उड्डिओ–उत्क्षिप्तः
उत्तुर्वो–दृष्टः
उदूलिअं–अवनतम्
उद्धओ–शान्तः
उद्धरिअं–अर्दितम्
उप्पन्तो–गलितः, विरक्तः
उम्मडो–उद्धृतः
उम्मुहो–उद्धृतः
उय्यलो–अध्यासितः
उरुमल्लो–प्रेरितः
उलुहुलअं–अवितृप्तम्
उल्लिक्कं–दुश्चेष्टितम्
उल्लुहुडिअं–उन्नतम्
उल्लोको–त्रुटितः
उवडिअं–अवनतम्
उव्विक्को–प्रलपितः
उव्विव्वओ–क्रुद्धः

उक्कंदं–विप्रलब्धम्
उक्करिअं–आरोपितम् , खण्डितम्
उक्कोसिअं–पुरस्कृतम्
उगाहिअं–उत्क्षिप्तम्
उच्चदिअं–मूषितम्
उच्चल्लो–अध्यासितः, दारितः
उच्चुरणो–उच्छिष्टः
उच्छिल्लो–अवजीर्णः
उज्झणिअं–विक्रीतम्, निम्नीकृतम्
उज्झलिअं–प्रक्षिप्तम्, विक्षिप्तम्
उज्झसिअं–उत्कृष्टम्
उडंबो–लिप्तः
उडिअं–अन्विष्टम्
उत्ततो–अध्यासितः
उदाहिअं–उत्क्षिप्तम्
उद्धारिअं–रणद्रुतम्, उत्खातम्
उद्धणो–उद्धतः
उद्धलो–पार्श्वद्वयाप्रवृतः
उप्पल्लो–अध्यासितः
उम्मरिअं–उन्मूलितम्
उय्यकिअं–पुञ्जीकृतम्
उरविअं–आरोपितम्, खण्डितम्
उलुओसिअं–रोमाञ्चितम्
उल्लिओ–उपसर्पितः
उल्लुअं–पुरस्कृतम्, रक्तम्
उल्लूढो–आरूढः
उवउज्जो–उपकारी
उविद्धो–स्रस्तः
उव्विडअं–चकितम्, क्लान्तकम्
उसलिअं–रोमाञ्चितम्

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ऊ

ऊआ–यूका
ऊणंदिअं–आनन्दितम्
ऊसअं–उपधानीकृतम्
ऊसुंभिअं–रुद्धगलरोदनम्

ऊगिअं–अलंकृतम्
ऊरिसंकिओ–रुद्धः
ऊसविअं–उद्वान्तम्
ऊसुंभिअं–उपधानीकृतम्

ए

एक्कल्लो = प्रबलः

एलविलो = धनी, वृषः

ओ

ओओधिअं = आघ्रातम्
ओअल्लम् = विप्रलब्धम्
ओउल्लिअं = पुरस्कृतम्
ओज्जरो = भीरूः
ओंदुरो–उन्दुरुः
ओम्मल्लं–घनीभूतम्
ओवाअओ–आपातपः
ओसडिओ–आकीर्णः
ओसरिओ–आकीर्णः, अक्षिसंकोचात् संज्ञितः
ओसिअं–अपूर्वम्
ओहल्ली–अपसृतिः
ओहामिओ–अभिभूतः

ओअम्मओ = अभिभूतः
ओअल्लो = कम्पः, अपचारः
ओच्छंदिअं = अपहृतशरीरादिव्यथितम्
ओणअं–अवनतम्
ओप्पं–मृष्टम्
ओमंसो–अपसृतः
ओसट्टो–विकसितः
ओसण्णो–त्रुटितः
ओसाअणं–महीशानम्
ओसिरणं–व्युत्सर्जनम्
ओहरणं–आघ्रातम्

क

कउडं–ककुदम्

कक्खलो–कर्कशः
कडदरिअं–छिन्नम्, छिद्रता

कडिओ–प्रीणितम्
कणइल्लो–शुकः
कत्तं–कललम्
कंदोट्टं–उत्पलम्

कक्खडो–कर्कशः
कच्चं–कार्यम्
कडप्पो–कलापः
कडिल्लं–आशीः, गहनम्, दौवारिकः, कटिवस्त्रम्, निर्विवरः, विपक्षः
कणइ–लता
कथो–उपरतः, क्षीणः

कमणी–निःश्रेणी

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

कमलं–आस्यम्, कलहः
करमा–क्षीणः
कलबू–अलाबूः
कव्वरिअं–आरोपितम्, खण्डितम्
कारिमं–कृत्रिमम्
किपाडो–स्खलितः
किरिकिरिआ–कर्णोपकर्णिका, कुतुकम्
कुच्छिमई–गर्भवती
कुडुबीअं–सुरतम्
कुम्मणो–म्लानः
कोडिओ–पिशुनः
कोलीरं–कुरुविन्दम्

करमूरी–हठहृता
करिल्लो–करीरः
कलेरं–करालम्
काअपिउला–कोकिला
कालं–तमिस्रम्
किमिघरवसणं–कौशेयम्
किरो–किरूः
कुडङ्गो–लतागृहम्
कुड्डं–कुतुमम्
कोज्जरिअं–आपूरितम्
कोडिल्लो–पिशुनः

ख

खंधमसी–स्कन्धयष्टिः
खुड्डुओ–क्षुल्लकः
खेड्डं–खेलः

खंधलट्ठी–स्कन्धयष्टिः
खुरहखुडी–प्रणयकोपः

ग

गअं–आघूर्णितम्
गअसाउल्लो–विरक्तः

गंजोलो–समाकुलः
गत्तो–गतः
गल्लो–गण्डस्थलम्
गविअं–अवधृतम्
गहिआ–ग्राह्याः
गामणहं–ग्रामस्थानम्
गावी–गौः
गुज्जलिओ–संघट्टितः,
गुम्मइओ–अपूरितः, स्खलितः, आमूलोच्चलितः, मूढः, विघटितः

गुम्मिओ–मूलाच्छिन्नः
गज्जिलिओ–अङ्गस्पर्शनिमित्तकहासः, अङ्गस्पर्शनिमित्तकपुलकः
गत्तडी–गायिका
गमिदो–अपूर्णः, गूढः, स्खलितः
गलद्धओ–प्रेरितः
गहरो–गृद्धः
गहिल्लो–ग्रहिलः
गामरेडो–ग्रामभक्षकः
गावो–गतः
गुमिलो–मूढः
गुलिअं–मथितम्

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

गोणा–गौः
गोदा–गोदावरी
गोला–गोदावरी
गोसो–प्रत्यूषः
गोणिक्को–गोसमूहः
गोरडितम्–स्रस्तम्
गोसण्णो–मुर्खः

घ

घअअंदं–मुकुरम्
घडं–सृष्टीकृतम्
घडिआ–गोष्ठी
घाअणो–गायनम्
घुसिमं–घसृणम्
घडइअं–संकुचितम्
घडाघडी–गोष्टी
घसणिअं–अन्विष्टम्
घुग्घुस्सुअं–अशंकं फणितम्

च

चउक्कं–चतुष्पथम्
चच्चरिओ–चंचरीकः
चच्चिक्को–स्थासकः
चण्डिज्जो–पिशुनः, कोपः
चपेटा–कराघातः
चलणाओहो–चरणायुधम्
चिक्कं–स्तोकः, क्षुतम्
चित्तलं–रम्यम्
चिमिणं–रोमाञ्चितम्
चिलिचिलिआ–धारा
चक्कलं–वर्तुलम्
चच्चा–तलाहतिः
चण्डिक्को–कोपः
चंदोज्जं–कुमुदम्
चप्पलओ–बहुमिथ्यावादी
चल्लणकं–जघनांशुकम्
चिक्खअणो–सहनः
चित्तविअओ–परितोषितः
चिरिचिरिआ–धारा

छ

छट्टा–छटा
छिक्कं–स्पृष्ठम्
छिच्छओ–जारः
छिण्णालो–जारः
छिल्लं–छिद्रम्
छेणो–स्तेनः
छंडिअं–छन्नम्
छाइल्लो–रूपवान्
छिच्छई–पुंश्चली
छिछि–धिक्धिक्
छिण्णो–जारः
छूहिअं–पार्श्वपरावृतम्

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ज

जअल्लो–छन्नः
जंघालुओ–द्रुतः
जडं–त्यक्तम्
जण्णहरो–नरराक्षसः
जंभणंभणो–स्वैरभाषी
जहणरोहो–ऊरुः
जुअणो–युवा
जोअडो–खद्योतः
जोइओ–खद्योतः
जोइ–विद्युतः
ज्झहुराविअं–निर्वासितम्

जंघामओ–द्रुतः
जच्छंदो–स्वच्छन्दः
जणउत्तो–ग्रामप्रधानः
जंपिक्खिरमग्गिरओ–दृष्टार्थयाचनशीलः
जरण्डो–वृद्धः
जहणूसुअं–जघनांशुकम्
जूसओ–उत्क्षिप्तः
जोअणो–खद्योतः
जोइक्खो–दीपः
जोओ–चन्द्रः

झ

झडिओ–श्रान्तः
झपिअं–पर्यस्तम्

झंदिअं–प्रद्रुतम्।

ठ

ठाणिज्जं–गौरवम्

ड

डंभिओ–डाम्भिकः
डेकुणो–मत्कुणः
डोसिणी–ज्योत्स्ना

डिंडओ–जलान्तः पतितः
डेड्डुरो–दर्दुरः

ण

णन्दिणी–धेनुः
णाली–स्रस्तः
णिउक्को–तूष्णीकः
णिक्कज्जो–अनवस्थितः
णिक्खाविओ–शान्तः
णिग्गठो–निर्गतः
णिज्जो–सुप्तः

णलिअं–निलयम्
णिअद्धणं–परिधानम्
णिउरं–छिन्नम्, जीर्णम्
णिक्कजो–निश्चयः
णिगमिअं–निर्वासितम्
णिच्चुड्डो–उद्धतः
णिप्पणिओ–जलधौतः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

णिप्फंसो–निस्त्रिंशः
णिम्मीसुओ–निःश्मश्रुकः
णिव्वहइ–उद्वहति
णिहवो–सुप्तः
णिहेलणं–निलयम्
णिमिअं–आघ्रातम्
णिरासो–नृशंसः
णिसुद्धो–वातितः
णिहुअं–सुरतम्
णीसंको–वृषः

त

तच्छिलो–तत्परः
तणसोल्ली–तृणशून्यम्
तण्णाअं–आर्द्रम्
तत्तुरिअं–रञ्जितम्
तंबकुसुमं–कुरवकम्, कुरण्टकम्
तलारो–तलवरः
तल्लडं–तल्पम्
तेआलिसा–त्रिचत्वारिंशत्
तोमरिओ–शस्त्रमार्जनम्
तडकडिओ–अनवस्थितः
तणेसी–तृणराशिः
तत्तिलो–तत्परः
तंबकिमी–इन्द्रगोपः
तलं–तल्पम्
तल्लं–तल्पम्
तित्ति–तात्पर्यम्
तेवण्णा–त्रिपञ्चाशत्

थ

थिरण्णेसो–अस्थिरः
थेवो–स्तोकः
थोवो–स्तोकः
थेरोस्सणं–अम्बुजम्
थोक्को–स्तोकः

द

दड्ढाली–दववर्त्म
दुग्गं–दुःखम्
दुद्धोलना–गौः
दुम्मइणी–कलहकारिणी
दूणो–द्विपः
दोग्गं–युग्मम्
दोंबुरो–तुंबुरिः
दोसारअणो–चन्द्रः
दरवल्लहो–कातरः
दुग्घोट्टो–द्विपः
दुदुमिअं–रसितम्
दुरिअं–हुतम्
दूसलो–दुर्भगः
दोग्घोट्टो–द्विपः
दोसणिजन्तो–चन्द्रः
दोसो–कोपः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

ध

धणिआ–धन्या
धारावासो–दुर्दुरः
धुअरासो–भ्रमरः
धुत्तो–आक्रान्तः
धुअहं–पुरस्कृतम्
धूमद्धअमहिसी–कृतिकाः
धूमरी–तुहिनम्
धोरणी–पङ्क्तिः

न

नंगओ–रुद्धः

प

पअरो–अर्थदरः
पअलाओ–फणी
पंसुलो–रुद्धः
पाङ्गरणं–प्रावरणम्
पच्छाणिओ–सन्मुखमागतः
पज्जतरं–दलितम्
पट्ठिअं–अलंकृतम्
पडिक्खरो–प्रतिकूलः
पडिरिग्गअं–भग्नम्
पडिसिद्धी–प्रतिस्पर्धा
पडिसोत्तो–प्रतिकूलः
पडिहत्थो–अपूर्वः
पडुविअं–समापितम्
पणिलिअं–हतम्
पण्णवण्णा–पञ्चपञ्चाशत्
पण्णा–पञ्चाशत्
पंडरंगु–ग्रामेशः
पत्थरं–पादताडनम्
पद्धलं–पार्श्वद्वयाप्रवृतः
पम्मी–पाणिः
पह्मलो–केसरः
परभत्तो–भीरुः
परिअट्टविअं–परिच्छन्नम्
परिअड्डिअं–प्रकटिकम्
परिक्खाइअओ–परिक्षीणः
परिच्चिअं–उत्क्षिप्तम्
परिहाइओ–परिक्षीणः
परेओ–पिशाचः
परोट्टं–पर्यस्तम्
पलहिअओ–मूर्खः, उपलहृदयः
पल्लित्तं–पर्यस्तम्
पल्लोट्टजीहो–रहस्यभेदी
पविग्घं–विस्मृतम्
पविरंजवो–स्निग्धः
पसल्लिओ–प्रेरितः
पहट्ठो–उद्धतः, अचिरदृष्टः
पाउरणं–प्रावरणम्, कवचम्
पाओ–फणी
पाडहुकः–प्रतिभूः
पाडिपिद्धी–प्रतिस्पर्धा
पासाणिओ–साक्षी
पासावो–गवाक्षः
पिउच्चा–पितृष्वसा, सखी
पिठसिआ–पितृष्वसा

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

पिडओ–आदिन्नः
पिप्पडिअं–यत्किंचित्पठितम्
पिव्वं–जलम्
पुण्णाली–पुंश्चली
पुरिलो–दैत्यः
पुव्वंगो–मुण्डितः
पेसणआली–दूती
पेक्किअं–वृषरटितम्
पिडुइअं–प्रशान्तम्
पिलुअं–क्षुतम्
पुआइ–उन्मत्तः, पिशाचः
पुप्फी–पितृष्वसा
पुलंघओ–भ्रमरः
पेज्जलिओ–संघटितः
पोरत्थो–मत्सरी

ब

बइल्लो–बलीवर्दः
बन्धोल्लो–मेलकः
बम्हालो–अपस्मारः
बहिओ–मथितः
बहुल्लिआ–ज्येष्ठभ्रातृवधूः
बाओ–बालः
बुलबुलो–बुद्बुदः
बंडिओ–बन्दी
बम्हहरं–अम्बुजम्
बलामोडी–बलात्कारः
बहुजाणो–चौरः, धूर्त्तः, जारः
बहुल्ली–क्रीडोचितशालभञ्जिका
बुड्डिरो–महिषः

भ

भच्चो–भागिनेयः
भाइरो–भीरुः
भिगं–नीलम्, स्वीकृतम्
भेज्जो–भीरूः
भट्टिओ–विष्णुः
भाउज्जा–भ्रातृजाया
भेजल्लो–भीरुः
भोइओ–महेषः

म

मइमोहिणी–सुरा
मघोणो–मघवान्
मडप्परो–गर्वः
मदोली–दूती
मरिओ–लुटितः, विस्तीर्णः
महल्लो–मुखरः
माउच्चा–मातृष्वसा, सखी
माणंसी–मायावी, मनस्वी
मइलपुत्ती–पुष्पवती
मंजरो–मार्जारः
मत्तवालो–मत्तः
गम्मक्को–गर्वः
महालयपक्खो–महालयपक्षः
माइंदो–माकन्दः
माउसिआ–मातृष्वसा
माभाइ–अभयम्

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

माहिवाओ–माघवातः
मुसलं–मांसलम्
मुहुरोमराइ–भ्रूः
मिअं–अलंकृतम्
मुहलं–मुखम्
मेहुणिआ–मातुलात्मजा, स्याली

र

रअणिद्धअं–कुमुदम्
रगिल्लो–अभिलषितः
रिंछोली–पंक्तिः
रिमिणो–रोदनशीलः
रूअरूइआ–उत्कलिका
रोक्कअं–प्रोक्षितम्
रइलक्खं–जघनम्
रिअं–लूनम्
रिट्ठो–अरिष्टम्, दैत्यः, काकः
रुद्धो–आक्रान्तः
रूवसिणी–रूपवती

ल

लंवा–वल्लरी, केशः
लइणा–लता
लज्जालुइणी–कलहकारिणी
लववो–सुप्तः
लुक्को–सुप्तः
ल्हिक्को–गतः
लअणी–लता
लक्कुडो–लगुडः
लडहा–विलासवती
लाहिल्लो–लम्पटः
लोट्ठो–स्मृतः

व

वअणीआ–उन्मत्ता, दुःशीला
वक्कं–पिष्टम्
वच्छुद्धलिओ–प्रत्युद्धतः
वडिणायो–घर्घरकण्ठः
वड्डिमं–स्तुतम्
वडइअं–पीडितम्
वणनत्तडिअं–पुरस्कृतम्
वप्पिअं–रक्तम्
वरइत्तो–नूतनवरः
वरत्तो–पीतः, पतितः, पेटितः
वल्लटं–पुनरुक्तम्
वइरोडो–जारः
वक्खलं–आच्छादितम्
वंजर–मार्जारः
वडिसाअं–स्तुतम्
वड्डुअरो–वृहत्तरः
वणइ–वनराजिः
वंदं–वृन्दम्
वप्पिओ–केदारः
वरण्डो–प्राकारः
वल्लकिअं–उत्संगितम्
वल्लविअं–लाक्षारक्तम्

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

वहिइअं–पर्याप्तम्
वाअडो–शुकः
वाडी–वृतिः
वामो–आक्रान्तः
वारिज्जो–विवाहः
विअंटुटं–अवरोपितम्, मुक्तम्
विच्छुरिअं–अपूर्वम्
विड्ढो–सुप्तोत्थितः
वित्थिरं–विस्तारः
विरुओ–विरुद्धः
विसारो–सैन्यम्
विहडणो–अनर्थः
विहुंउओ–विधुंतुदः
वीवी–वीचिः
वेणुसारो–भ्रमरः
वेलंबो–विडम्बनम्
वेल्लहल्लो–कोमलः, विलासी
वेल्लरीओ–वल्लरी, केशः
व्युडो–विटः

बहुहाडिणी–वध्वा उपरि परिणीता
वाउल्लो–प्रलपितः
वामूलूरो–वामलूरुः
वारडुं–अभिपीडितम्
वावडो–कुटुम्बी
विउसग्गो–व्युत्सर्गः
विड्ढितं–अर्जितम्
विडुच्छओ–निषिद्धः
विरिचरो–धाराविरेचनशीलः
विवओ–विस्तीर्णः
विसो–वृषः, मूषकः
विहिमिहिओ–विकसितः
वीली–वीथिः
वेणिअं–वचनीयम्
वेण्णो–आक्रान्तः
वेल्लइअं–संकुचितम्
वेल्लरी–विलासवती
वोट्टी–सक्तः

स

संसाओ–आरूढः, चूर्णितः, पीतः, उद्विग्नः
सइलासिओ–मयूरः
संकरो–रथ्या
संघअणं–संहननम्
सडिअग्गिअं–वर्धितम्
सत्थरो–संस्तरः
समराइअं–पिष्टम्
समुड्डहरं–अम्बुगृहं
सहउत्थिया–दूती

सइकोडी–शतकोटिः
सग्गहो–मुक्तः
संगोल्लं–संघातः
संचारी–दूती
सत्तो–गतः
सड्डालं–नूपुरम्
समुद्धणवणीअं–चन्द्रः
सरिसाहुलो–सदृशः
साउल्लो–अनुरागः

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY

साणिओ–शान्तः
सालक्किआ–शारिका
सिट्ठो–सुप्तोत्थितः
सिंहडहिल्लो–बालकः
सीउट्टं–हिमकालदुर्दिनम्
सीसक्कं–शीर्षकाम्
सुहरओ–धारिकागृहम्, चटकः
सूरद्धओ–दिवसः
सेवालं–सेवालम्
सोहिअं–पिष्टम्

सामरी–शाल्मरी
साहुली–शाखा
सिप्पी–शूची
सिहिणं–स्तनम्
सीउल्लं–हिमकालदुर्दिनम्
सुण्हसिओ–निद्राशीलः
सूरंगो–दीपः
सूरल्लो–मध्याह्नम्
सोत्ती–तरङ्गिणी

ह

हक्किअं–उन्नतम्
हडहडओ–अनुरागः
हिज्जा–ह्रीः
हीमोरं–भीमरम्
हेपिअं–उन्नतम्
हेसमणं–उन्नतम्

हट्ठमहट्ठो–युवस्वस्थः
हल्लपविअं–त्वरितम्
हिद्धौ–स्रस्तः
हीरणा–त्रपा
हेरिवो–हेरम्बः
हेसिअं–रसितम्

❑ ❑ ❑

FOR PRIVATE & PERSONAL USE ONLY